# कृष्ण बसंती

आरएनआई पं. क्रं
T/MP/2024/0815/9239/1118

अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

मूल्य: 100 /- रूपये

वर्ष- 1 अंक - 6, जनवरी - 2025
Vol - I, Issue No. VI
January - 2025

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

IIFS 2.0 Impact Factor 2024-25

प्रधान संपादक
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
संपादक
डॉ. मोहन बैरागी

DOI 10.5281/zenodo.14958116 / ISSN No. 3048-8648
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0065669
Email : krishnabasanti@gmail.com
अक्षरवार्ता पब्लिकेशंस का प्रकाशन, उज्जैन, मप्र., भारत से प्रकाशित

मासिक पत्रिका

# कृष्ण बसंती

आरएनआई पं. कं T/MP/2024/0815/9239/1118 मूल्य: 100 /- रूपये

वर्ष- 1 अंक - 6 , जनवरी - 2025
Vol - I, Issue No. VI
January - 2025

2.0 Impact Factor 2024-25

ISSN No. 3048-8648

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

## MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा

संपादक - डॉ. मोहन बैरागी

व्यवस्थापक- आराध्य बैरागी

संपादक मंडल :-

प्रो. जगदीशचंद्र शर्मा
डॉ.राजू सी. पी.
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. विजय कुमार सोनिया
डॉ. श्री कांत मिश्रा
डॉ. जिल्सा टी. एन.
डॉ. श्रवण कुमार सोलंकी
प्रो. मोहसिन अली खान
डॉ. दीपशिखा
डॉ. मो. मजिद मियाँ, पश्चिम बंगाल
डॉ. विष्णु प्रसाद शर्मा
डॉ. संदीप सिंह मुंडे

सहायक सम्पादक :-

डॉ. मोहन बैरागी
डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

***विशेषज्ञ सलाहकार समिति***

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), जय वर्मा (यू के), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा)
प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू),
प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर),
डॉ. अनिल सिंह (मुंबई),

***सह संपादक***

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

संपादकीय कार्यालय का पता :-
43, क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत
मोबाईल नं. **8989547427, 6264400265**
Email: krishnabasanti@gmail.com

*नोट :- कृष्ण बसंती शोध पत्रिका में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।*

**आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार**

अनुक्रम


» भारतीय समकालीन चित्रकला में मंजीत बाबा के चित्रों में धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत की भूमिका
गुंजन सिंह, डॉ. सूरज पाल साहू 07

» आधुनिक कलाकार राजा रवि वर्मा के चित्रों में आध्यात्मिक स्वरूप का एक अध्ययन
वारणी शुक्ला, डॉ. सूरज पाल साहू 10

» मृदुला गर्ग का जीवन परिचय
प्रा. गणेश संतोष वानखेड़े 13

» वर्तमान में भारत-चीन संबंधों का अध्ययन : एक विश्लेषण
डॉ. मीना कनासे 16

» अंधायुग : पौराणिक मिथक, आधुनिक बोध व युद्धों का सामाजिक यथार्थ
अयूब अंसारी 20

» मणि मधुकर के नाटकों में लोक परम्परा का समावेश विकास 24

» दलित चेतना और चिंतन की अवधारणा
डॉ. रमेश यादव 27

» बांग्लादेश की वर्तमान स्थिति और भारत : एक अध्ययन
डॉ. मीना कनासे 30

» मालती जोशी की प्रतिनिधि कहानियों में समकालीन मूल्यों का यथार्थ चित्रण
शालिनी सिंह, डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति 33

» अंजना वर्मा के काव्य में नारी विमर्श
तहुरा नाज, डॉ. सोनिया यादव 36

» आदिवासी पत्रिका 'गोंडवाना दर्शन' की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी अस्मिता और प्रतिरोध के स्वर
राज कुमार 40

» कैलाश बनवासी की कहानियों में समाज का यथार्थ चित्रण
दुर्गेश कुमार, जयपाल सिंह प्रजापति 43

» भारत में वंचित तबकों के सामाजिक एवं राजनीतिक पतन का कारण : एक ऐतिहासिक एवं धर्मशास्त्रीय अवलोकन
डॉ. अमृतंजय कुमार 46

» नारीवादी लेखन पाश्चात्य लेखकों के सन्दर्भ
डॉ. डी. एस. भण्डारी 48

» वृद्ध विमर्श के आलोक में प्रेमचंद की कहानियाँ
तहुरा नाज, डॉ. सोनिया यादव 50

» 'एक सड़क सत्तवन गलियाँ' उपन्यास पर बनी फिल्म 'बदनाम बस्ती' : समलैंगिकता के विशेष सन्दर्भ में
फहमी वी मीरान 54

» विलुप्त होता ख्याल घराना
प्रांशु शर्मा, डॉ. इन्द्रेश मिश्रा 56

» हिंदी और बांग्ला काव्य में स्त्री-प्रतिरोध के प्रारंभिक स्वर
डॉ. तहसीन मजहर 58

» भारत का स्वाधीनता संघर्ष-कानपुर के प्रपरिप्रेक्ष्य में (1920 ई. - 1947 ई.)
डॉ. जितेंद्र सिंह 61

» गुप्तोत्तर काल में शैव धर्म का प्रसार
डॉ. पवन कुमार सिंह 66

» सावित्री बाई फुले का जीवन और शिक्षा
डॉ. अमर ज्योति 70

» हिन्दी फिल्मों में पटकथा लेखन की परम्परा और कमलेश्वर
डॉ. मनु प्रताप 73

» मंदिरों का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व
डॉ. विनी शर्मा 75

» कवि कालीचरण 'स्नेही' के काव्य में बुद्ध एवं बुद्धत्व
वीर पाल, डॉ. मनु प्रताप 80

» राजस्थानी लोक कहावता में जीव-जन्तु अर पंखेरू
शिवानी सिंह 83

» उत्तर औपनिवेशिक वर्चस्व बनाम ग्रामीण संस्कृति का प्रतिरोध, विशेष सन्दर्भ : पाहीघर
चाहत 86

» समकालीन लेखिकाओं के यात्रा वृत्तांत में शिल्प पक्ष : एक अवलोकन
सोनी रानी, डॉ. नीलिमा वर्मा 89

» नरेंद्र कोहली की रामकथा में नारी पात्रों की भूमिका और नारीवाद
प्रियंका, प्रो. मीना 93

» हिमवंत कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल के काव्य में प्रकृति चित्रण के विविध रंग
कीर्ति गिल 95

» महिला सशक्तिकरण : चिंतन के विविध आयाम
डॉ. चन्द्रेश 97

» रामस्वरूप दीक्षित के व्यंग्य साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का विश्लेषण
ज्योति देवी रिछारिया, डॉ. ज्योति पटेल 99

» हिन्दी ग़ज़ल : भारत की साझी संस्कृति
डॉ. अंजनी कुमार 101

» Beti bachao Beti Padhao Canpaign : An Attempt to Gender Equality in Education
Dr. Bipin Prasad Singh
Dr. N. N. Mishra 103

Krishna Basanti International Research Journal
ISSN No. 3048-8648 MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0065669
DOI 10.5281/zenodo.14958116
Vol - I, Issue - VI, January - 2025

कृष्ण बसंती अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
कृष्ण बसंती

# हिमवंत कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल के काव्य में प्रकृति चित्रण के विविध रंग

कीर्ति गिल

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हि. क. च. कुं. ब. राजकीय महाविद्यालय, नागनाथ पोखरी, चमोली, उत्तराखण्ड

छायावादोत्तर कवियों की श्रेणी मे रखे जाने वाले सुप्रसिद्ध कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल सौंदर्य के कवि थे। प्रकृति का सजीव रूप में दर्शन करने वाले एवं प्रकृति के सुक्ष्मतम विषयों को भी कविता के विषय के रूप में वर्णित करने वाले कवियो मे हिमवन्त कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल का नाम अग्रगण्य है। कविबर्तवाल ने प्रकृति के जिस विषय को भी स्पर्श किया उसको अपने अंतरमन की दृष्टि से देखा, कवि की रचनाओं में छायावाद की सभी विशेषताओं के दर्शन तो होते ही हैं साथ ही प्रगतिवाद भी उनके विशेष क्षेत्र में समाहित हो जाता है। हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल का जन्म 20 अगस्त सन् 1919 को जिला चमोली गढ़वाल,तल्ला नागपुर के मलकोटी गांव में हुआ इनके पिता श्री ठाकुर भुपाल सिंह बर्तवाल तल्ला नागपुर के गणमान्य व्यक्तियों में से एक थे। बर्तवाल जी की प्रारंभिक शिक्षा चमोली के मिडिल स्कूल नागनाथ में इंटरमीडिएट देहरादून में एवं उच्च शिक्षा लखनऊ एवं इलाहाबाद में संपन्न हुई। हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में जाने जाते हैं।

**संकेत शब्द**:-हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल, हिमवंत कवि के रूप में, प्रकृति चित्रण के विभिन्न रूप।

**उद्देश्य**:-प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल के कृतित्व में समाहित प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालना है।

प्रकृति आदिकाल से ही मनुष्य की सहचरी रही है। प्रकृति संबंधित विविध कविताओं द्वारा छायावादी एवं प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया है। कवि चंद्र कुंवर बर्तवाल का जन्म प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण हिमालय की गोद में स्थित मलकोटी गांव में हुआ था जिस कारण उन्हें प्रकृति का सानिध्य पूर्ण रूप से मिलता रहा। क्षय रोग से ग्रसित कवि ने रोग की भयंकर पीड़ा में भी प्रकृति सहचरी का सानिध्य पाया वहां का प्राकृतिक सौंदर्य ही कवि में बार-बार प्राण फूंक दिया करता था यही कारण है की अल्पायु में ही कवि ने इतना अदभुत साहित्य रच दिया। कवि अपने प्राणों की आहुति देकर भी जीवन की अंतिम सांसों तक हिंदी साहित्य की श्री वृद्धि में लगे रहे। वृण्य विषय की दृष्टि से चंद्रकुंवर बर्तवाल की कविताएं विविधता लिए हुए हैं ,किंतु प्रकृति चित्रण में वह अपना अलग स्थान रखती है ।यह प्रकृति ही कवि के काव्य की मुख्य भावभूमि है,यही कारण है की कवि को हिमवंत कवि कहा जाता है हिमालय क्षेत्र की प्रकृति बांज, बुरांश, देवदार के वृक्ष घुघुती ,कफ्फू पक्षियों की चहचहाट हिमालय के शिखरों पर फूलने वाले रैमासी पुष्प की सुगंध, काफल के रसीले फलफ्योंली, बसंत ऋतु, पावस ऋतु ,हिमालय का मौसम एवं विभिन्न ऋतु ,नदियां पहाड़, झरने ,वन देवी -देवता, बसती सध्या ,हेमंत वर्षा छवि कंकड़ पत्थर ज्योत्सना रजत चोटियां ,मेघ मुक्ता, अलकनंदा ,हिम चांदनी, चींटी,गिलहरी,काफल, आदि सभी विषयों पर हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल ने कविताओं की रचना की है। प्रकृति ही कवि का मुख्य गन्तव्य है कवि की कविताओं से यदि प्रकृति चित्रण को हटा दिया जाए तो कविताएं अपना उद्देश्य ही खो देगी। छायावादी कवियों का प्रकृति की ओर विशेष झुकाव प्रकृति की स्वतंत्रत सत्ता को काव्य में प्रतिबिंबित करना और प्रकृति के सौंदर्य को उद्घाटित करना यह सब आधुनिकता का परिणाम भी है। हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल भी सामाजिक स्वाधीनता एवं रोग की पीड़ा से मुक्ति प्रकृति की गोद में जाकर ही पाते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन ही हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य को अर्पित कर दिया प्रकृति का सौंदर्य कवि के लिए केवल आश्चर्य या प्रसन्नता का विषय ही नहीं वरन् पूजनीय भी है।

न जाने कितने शत जीवन, किए मैंने तुमको अर्पण, माधुरी मेरे हिमगिरी की

हिमालय शीर्षक कविता की इन पंक्तियों में हिमालय का स्थूल शरीर कवि के दृष्टिपथ से ओझल हो जाता है और सामने आती है जटा फैलाए एक वृद्ध तपस्वी की मूर्ति-

शोभित चंद्रकला मस्तक पर
भस्म विभूषित नग्न कलेवर
कटि पर कृष्ण गजानिन सा घन
गिरती घोर घोष कर पद पर
वज्र घटा सी दीप्ति सुरधुनी।
बिखरा जटा खड़ा वह तापस, युग युग से पर्वत के ऊपर
पूर्व दिशा की ओर चमकता ,उसकी रजत जटा पर दिनकर।

हिमालय की ही भाति कवि ने वर्षा ऋतु ,ग्रीष्म ऋतु ,शरद ऋतु, हेमंत ऋतु पर अनेक सुंदर कविताएं लिखी है। वर्षा ऋतु तो जैसे उनको प्रिय ऋतु जान पड़ती है। वर्षा ऋतु बादल, दामिनी के सौंदर्य को कवि ने अनेक रूपों में देखा है। पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा ऋतु का सौंदर्य अपने चरम पर होता है यह सौंदर्य मनुष्य की भावनाओं एवं प्राचीन स्मृतियों को उद्दीप्त कर मनुष्य को आनंद लोक में पहुंचा देता है।

घन गर्जन सुन छितर दौड़तीगो समूह सी बदली
ग्वाले की लकुटी सी रह रह चमक रही है बिजली
असफल होकर क्रोध कर रही इधर-उधर दौड़ती पवन
ग्वालिन की ममता सी झरती घेर गगन वर्षा उजली।

वर्षा ऋतु ने कवि की प्राचीन स्मृतियों को जगा दिया है और कवि का हृदय भी पावस ऋतु के समान ही हो गया है

नभ मे वर्षा की छवि छाई, उर में पावस की ऋतु आई।

ग्रीष्म ऋतु की तपन के पश्चात आई वर्षा ऋतु के शीतल सुखद प्रभाव की भी

बड़ी सुंदर अभिव्यक्ति थोड़े ही शब्दों में कवि ने इस प्रकार की है-

जग का ताप शांत करने को, उमड़ उमड़ वर्षा आई
दिशा दिशा से उठ कर मंगल की बदली लहराई
उठी पवन कांपे दुम पल्लव
हुआ गगन में मधुर मधुर रव
चौंकी चपला दिशा दिशा से मधुर झड़ीझर आई।

वर्षा ऋतु के पश्चात चारो ओर फैल जाने वाली मनमोहक हरियाली का मानवीकरण अलंकार के माध्यम से कवि ने सुंदर वर्णन किया है-

आद्र पल्लवो ने जीवन की सजल रागिनी गाई
खोले दुर्वा ने निज लोचन
हुए हरे मुरझे किसलय वन।

इन पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु के द्वारा पेड़ पौधों दूर्वा को मिले नए जीवन पर बहुत सुंदरता के साथ प्रकाश डाला है। वर्षा ऋतु की ही भांति कवि ने वसंत ऋतु का सुंदर वर्णन अपनी कविताओं में किया है वसंत ऋतु की सुंदर दोपहर के वातावरण का वर्णन करते हुए कवि 'दोपहरी' कविता में लिखते हैं-

है वसंत की दोपहरी, चुपचाप खड़े हैं
तरुण चीड़ के पेड़, नयन मुकुलित कर पृथ्वी
पड़ी हुई है नए-नए मधु के पत्रों की.....
अब वृन्त गए फूलों से भर
हो गई दिशाएं गीत मुखर
हो गए हरित अब वन प्रांतर
पृथ्वी पर है बिछ गई सुघर
दूर्वा की अब कोमल चादर।

वसंत ऋतु की तरह ही शरद ऋतु का सौंदर्य भी कवि की लेखनी से अछूता नहीं रहा है शरद ऋतु की रात्रि की सुंदर अभिव्यंजना करते हुए कई लिखते हैं

आ गया शरद पृथ्वी में लो
हंस रहा चंद्रमा पुलकित हो
तारों से अब सज गया गगन
सज गई आंसुओं से चितवन,
ओस सजाती दूर्वा को।

कवि की सभी श्रेष्ठ प्रकृति संबंधी रचनाओं में हिमालयी ऋतुओं का सौंदर्य, देवदार और चीड़ के वृक्ष ,बांज ,बुरांश की मनमोहिनी छवि , कल कल बहने वाली नदियां और झरनों की माधुरी विद्यमान है कवि देवदार और चीड़ के वृक्षों के सौंदर्य पर लिखते हैं-

नीला देवदार का वन है, जिस पर मोहित हुआ पवन है
छाया के अधरों पर झुक कर, तरुवर करते मृदु मृदु मर्मर
हिमगिरी में निदाघ फैला है ,खुरच रही हिरणियां वदन है।

इसी प्रकार चीड़ के वर्षों के सौंदर्य को अभिव्यक्त करते हुए मानवीकरण अलंकार की सुंदर छटा बिखरते हुए कवि लिखते हैं-

है बसंत की दोपहरी ,चुपचाप खड़े हैं
तरुण चीड़ के पेड़ ,नयन मुकुलित कर पृथ्वी

कोकिल, कफ्फू, घुघुती आदि पक्षियों ने भी कवि के प्रकृति चित्रण को अत्यंत मनमोहक छवि से सुसज्जित कर दिया है वसंत ऋतु में पक्षियों की प्रसन्नता एवं उनके द्वारा किया जाने वाला वसंत का स्वागत गान कवि की कविताओं का प्राण है 'कोयल कुक' कविता मेंकवि लिखते हैं-

कूक उठी कोयल इस वन में
तार तार झंकृत हर्षोन्मत, झूम उठे पादप इस वन में
आंचल में समेट पागलपन,कविता स्मृतियां लाई
आम्रबालिका से मिलने को है इस वन में आई।
बसंत ध्वनि (कफ्फू)
मैं चुपचाप खड़ा था सहसा, मृदु ध्वनिकर पंखों की
बैठी कोई लघु पद धर कर शाखों पर प्राणों की
मैंने पर्णों के अंतर में लीन कर लिया उसको
वह करुणा गदगद वाणी में गाती रही निशा भर
उसे वसंत के गीत ना होता जिसका पतझर।

हिमालय प्रदेश का यह भूभाग हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल कविताओं में मुखर हो उठा है बचपन से ही चंद्र कुंवर प्रकृति के नाना रूप छवि चित्रों को देखकर चकित थे कवि ने इन चित्रों को अपनी वाणी के माध्यम से चुन चुन कर वाग्देवी के श्री चरणों में अर्पित किया पहाड नदियों का जल फूल ,वृक्ष ,पक्षी को समाहित करते हुए एक ही कविता में समग्र चित्रण प्रस्तुत करते हुए कवि लिखते हैं

यह बांज पुराने पर्वत से
यह हिम सा ठंडा पानी,
यह फूल लाल संध्या से भी,
इनकी यह डाल पुरानी
इस खग का स्नेह काफलों से
इसकी कूक पुरानी।

प्रकृति चित्रण छायावाद की भी एक प्रमुख विशेषता थी किंतु उनकी प्रकृति चित्रण संबंधी कविताओं में कल्पना की प्रधानता थी छायावादी कवियों से चंद्रकुंवर बर्तवाल की प्रकृति इसी संदर्भ में भिन्न है यहीं वह अपनी अलग पहचान बनाने में सफल होते हैं बर्तवाल जी की कविता में प्रकृति का कोई भी काल्पनिक चित्र नहीं है। उन्होंने अपने आसपास के क्षेत्र में जो भी देखा उसे अपनी कविताओं में स्थान दिया।प्रकृति चित्रण में हिमवन्त कवि चंद्रकुंवर बर्तवाल प्रकृति का केवल रंग रूप ही वर्णित नहीं करते बल्कि उसमें वहां की मिट्टी की सौंधी सुगंध भी है। पर्वतीय प्रदेश का जनजीवन वहां का रहन-सहन भी उनके काव्य में समाहित है।उनका परिचय इस प्रकृति से बहुत पुराना है बल्कि कवि के शब्दों में तो जन्म-जन्मांतर का है। कवि यदि कोई अंतिम इच्छा है तो यही कि उनका दोबारा जन्म हो तो इन्हीं फूलों से लदी घाटियों, हिम से ढकी चोटियों के बीच हो। प्रकृति को देखकर चंद्रकुंवर बर्तवाल के प्राण उमड़ आते हैं प्रकृति के परिचय की इसी घनिष्ठता के कारण ही वे प्रकृति कासुक्ष्म से भी सुक्ष्म वर्णन कर पाए हैं इसीलिए वे हिमवंत के प्रिय कवि कहलाए हैं।

संदर्भ सूची:-


1. चंद्रकुंवर बर्तवाल संपूर्ण काव्य साहित्य: डॉ योगंबर सिंह बर्तवाल, चंद्रकुंवर बर्तवाल शोध संस्थान उत्तराखंड एवं समय साक्ष्य
2. छायावाद: डॉ नामवर सिंह: राजकमल प्रकाशन
3. चंद्रकुंवर बर्तवाल की कविताएं: हरेंद्र सिंह असवाल: स्वराज प्रकाशन
4. चंद्रकुंवर बर्तवाल का जीवन दर्शन: डॉ योगंबर सिंह बर्तवाल चंद्र कुंवर बर्तवाल शोध संस्थान